

**पत्र सूचना कार्यालय  
भारत सरकार  
प्रधानमंत्री कार्यालय**

27-जनवरी-2019 11:33 IST

**'मन की बात' की 52वीं कड़ी में प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ (27.01.2019)**

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार। इस महीने की 21 तारीख को देश को एक गहरे शोक का समाचार मिला। कर्नाटक में टुमकुर जिले के श्री सिद्धगंगा मठ के डॉक्टर श्री श्री श्री शिवकुमार स्वामी जी हमारे बीच नहीं रहे। शिवकुमार स्वामी जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज-सेवा में समर्पित कर दिया। भगवान बसवेश्वर ने हमें सिखाया है - 'कायकवे कैलास' - अर्थात् कठिन परिश्रम करते हुए अपना दायित्व निभाते जाना, भगवान शिव के निवास-स्थान, कैलाश धाम में होने के समान है। शिवकुमार स्वामी जी इसी दर्शन के अनुयायी थे और उन्होंने अपने 111 वर्षों के जीवन काल में हजारों लोगों के सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक उत्थान के लिए कार्य किया। उनकी ख्याति एक ऐसे विद्वान के रूप में थी, जिनकी अंग्रेजी, संस्कृत और कन्नड़ भाषाओं पर अदभुत पकड़ थी। वह एक समाज सुधारक थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन इस बात में लगा दिया कि लोगों को भोजन, आश्रय, शिक्षा और आध्यात्मिक ज्ञान मिले। किसानों का हर तरह से कल्याण हो, ये स्वामी जी के जीवन में प्राथमिकता रहती थी। सिद्धगंगा मठ नियमित रूप से पशु और कृषि मेलों का आयोजन करता था। मुझे कई बार परम पूज्य स्वामी जी का आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला है। वर्ष 2007 में, श्री श्री श्री शिवकुमार स्वामी जी के शताब्दी वर्ष उत्सव समारोह के अवसर पर हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ॰ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम टुमकुर गए थे। कलाम साहब ने इस मौके पर पूज्य स्वामी जी के लिए एक कविता सुनाई थी। उन्होंने कहा :

"O my fellow citizens - In giving, you receive happiness,

In Body and Soul - You have everything to give.

If you have knowledge - share it

If you have resources - share them with the needy.

You, your mind and heart

To remove the pain of the suffering, And, cheer the sad hearts.

In giving, you receive happiness Almighty will bless, all your actions."

डॉक्टर कलाम साहब की यह कविता श्री श्री श्री शिवकुमार स्वामी जी के जीवन और सिद्धगंगा मठ के mission को सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करती है। एक बार फिर, मैं ऐसे महापुरुष को अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो! 26 जनवरी 1950 को हमारे देश में संविधान लागू हुआ और उस दिन हमारा देश गणतंत्र बना और कल ही हमने आन-बान-शान के साथ गणतंत्र दिवस भी मनाया लेकिन मैं, आज कुछ और बात करना चाहता हूँ। हमारे देश में एक बहुत ही महत्वपूर्ण संस्था है, जो हमारे लोकतंत्र का तो अभिन्न अंग है ही और हमारे गणतंत्र से भी पुरानी है - मैं भारत के चुनाव आयोग के बारे में बात कर रहा हूँ। 25 जनवरी को चुनाव आयोग का स्थापना दिवस था, जिसे 'राष्ट्रीय मतदाता दिवस', National Voters' Day के रूप में मनाया जाता है। भारत में जिस scale पर चुनाव का आयोजन होता है उसे देखकर दुनिया के लोगों को आश्चर्य होता है और हमारा चुनाव आयोग जिस बखूबी से इसका आयोजन करता है इसे देखकर प्रत्येक देशवासी को चुनाव आयोग पर गर्व होना स्वाभाविक है। हमारे देश में यह सुनिश्चित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी जाती है कि भारत का प्रत्येक नागरिक, जो एक पंजीकृत मतदाता है, registered मतदाता है - उसे मतदान करने का अवसर मिले।

जब हम सुनते हैं कि हिमाचल प्रदेश में समुद्र तल से 15,000 फीट की ऊँचाई वाले क्षेत्र में भी मतदान केंद्र स्थापित किया जाता है, तो अंडमान और निकोबार के द्वीप समूह में दूर-दराज के द्वीपों में भी वोटिंग की व्यवस्था की जाती है। और

आपने गुजरात के विषय में तो जरूर सुना होगा कि गिर के जंगल में, एक सुदूर क्षेत्र में, एक पोलिंग बूथ, जो सिर्फ केवल 1 मतदाता के लिए है। कल्पना कीजिए... केवल एक मतदाता के लिए। जब इन बातों को सुनते हैं तो चुनाव आयोग पर गर्व होना बहुत स्वाभाविक है। उस एक मतदाता का ध्यान रखते हुए, उस मतदाता को उसके मताधिकार का उपयोग करने का अवसर मिले, इसके लिए, चुनाव आयोग के कर्मचारियों की पूरी टीम दूर-दराज क्षेत्र में जाती है और वोटिंग की व्यवस्था करते हैं- और यही तो हमारे लोकतंत्र की खूबसूरती है।

मैं, हमारे लोकतंत्र को मजबूत करने का निरंतर प्रयास करने के लिए चुनाव आयोग की सराहना करता हूँ। मैं सभी राज्यों के चुनाव आयोग की, सभी सुरक्षा कर्मियों, अन्य कर्मचारियों की भी सराहना करता हूँ जो मतदान प्रक्रिया में भाग लेते हैं और स्वतन्त्र और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करते हैं।

इस साल हमारे देश में लोकसभा के चुनाव होंगे, यह पहला अवसर होगा जहाँ 21वीं सदी में जन्मे युवा लोकसभा चुनावों में अपने मत का उपयोग करेंगे। उनके लिए देश की ज़िम्मेदारी अपने कंधों पर लेने का अवसर आ गया है। अब वो देश में निर्णय प्रक्रिया के हिस्सेदार बनने जा रहे हैं। खुद के सपनों को, देश के सपनों के साथ जोड़ने का समय आ चुका है। मैं युवा-पीढ़ी से आग्रह करता हूँ कि अगर वे मतदान करने के लिए पात्र हैं तो खुद को जरूर मतदाता के रूप में register करवाएँ। हम में से प्रत्येक को अहसास होना चाहिए कि देश में मतदाता बनना, मत के अधिकार को प्राप्त करना, वो जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। साथ-साथ मतदान करना ये मेरा कर्तव्य है - ये भाव हमारे भीतर पनपना चाहिये। जीवन में कभी किसी भी कारण से, अगर मतदान नहीं कर पाए तो बड़ी पीड़ा होनी चाहिए। कभी कहीं देश में कुछ ग़लत होता हुए देखें तो दुःख होना चाहिए। हाँ ! मैंने वोट नहीं दिया था, उस दिन मैं वोट देने नहीं गया था - इसका ही खामियाजा आज मेरा देश भुगत रहा है। हमें इस ज़िम्मेदारी का अहसास होना चाहिए। ये हमारी वृत्ति, ये हमारी प्रवृत्ति बननी चाहिये। ये हमारे संस्कार होने चाहिए। मैं देश की जानी-मानी हस्तियों से आग्रह करता हूँ कि हम सब मिलकर voter registration हो, या फिर मतदान के दिन वोट देना हो, इस बारे में अभियान चलाकरके लोगों को जागरूक करें। मुझे उम्मीद है कि भारी संख्या में युवा मतदाता के रूप में पंजीकृत होंगे और अपनी भागीदारी से हमारे लोकतंत्र को और मजबूती प्रदान करेंगे।

मेरे प्यारे देशवासियों, भारत की इस महान धरती ने कई सारे महापुरुषों को जन्म दिया है और उन महापुरुषों ने मानवता के लिए कुछ अदभुत, अविस्मरणीय कार्य किये हैं। हमारा देश बहुरत्ना-वसुंधरा है। ऐसे महापुरुषों में से एक थे - नेताजी सुभाष चन्द्र बोस। 23 जनवरी को पूरे देश ने एक अलग अंदाज में उनकी जन्म जयन्ती मनाई। नेताजी की जन्म जयन्ती पर मुझे भारत की आजादी के संघर्ष में अपना योगदान देने वाले वीरों को समर्पित एक museum संग्रहालय का उद्घाटन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आप जानते हैं कि लाल किले के भीतर आज़ादी से अब तक कई ऐसे कमरे, इमारतें बंद पड़ी थी। उन बंद पड़े लाल किले के कमरों को बहुत सुन्दर संग्रहालयों में बदला गया है, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस और Indian National Army को समर्पित संग्रहालय; 'याद-ए-जलियाँ'; और 1857 -Eighteen Fifty Seven, India's First War of Independence को समर्पित संग्रहालय और इस पूरे परिसर को 'क्रान्ति मन्दिर' के रूप में देश को समर्पित किया गया है। इन संग्रहालयों की एक-एक ईंट में, हमारे गौरवशाली इतिहास की खुशबू बसी है। संग्रहालय के चप्पे-चप्पे पर हमारे स्वाधीनता संग्राम के वीरों की गाथाओं को बयां करने वाली बातें, हमें इतिहास के भीतर जाने के लिए प्रेरित करती हैं। इसी स्थान पर, भारत माँ के वीर बेटों - कर्नल प्रेम सहगल, कर्नल गुरबख्श सिंह ढिल्लो और मेजर जनरल शाहनवाज़ खाँ पर अंग्रेज हुकूमत ने मुकदमा चलाया था।

जब मैं लाल किले में, क्रान्ति मंदिर में, वहाँ नेताजी से जुड़ी यादों के दर्शन कर रहा था तब मुझे नेताजी के परिवार के सदस्यों ने एक बहुत ही खास कैप, टोपी भेंट की। कभी नेताजी उसी टोपी को पहना करते थे। मैंने संग्रहालय में ही, उस टोपी को रखवा दिया, जिससे वहाँ आने वाले लोग भी उस टोपी को देखें और उससे देशभक्ति की प्रेरणा लें। दरअसल अपने नायकों के शौर्य और देशभक्ति को नई पीढ़ी तक बार बार अलग अलग रूप से निरंतर पहुँचाने की आवश्यकता होती है। अभी महीने भर पहले ही 30 दिसंबर को मैं अंडमान और निकोबार द्वीप गया था। एक कार्यक्रम में ठीक उसी स्थान पर तिरंगा फहराया गया, जहाँ नेताजी सुभाष बोस ने 75 साल पहले तिरंगा फहराया था। इसी तरह से अक्टूबर 2018 में लाल किले पर जब तिरंगा फहराया गया तो सबको आश्चर्य हुआ, क्योंकि वहाँ तो 15 अगस्त को ही यह परम्परा है। यह अवसर था आजाद हिन्द सरकार के गठन के 75 वर्ष पूरे होने का।

सुभाष बाबू को हमेशा एक वीर सैनिक और कुशल संगठनकर्ता के रूप में याद किया जाएगा। एक ऐसा वीर सैनिक जिसने आज़ादी की लड़ाई में अहम भूमिका निभाई। "दिल्ली चलो", "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा", जैसे ओजस्वी नारों से नेताजी ने हर भारतीय के दिल में जगह बनाई। कई वर्षों तक यह मांग रही कि नेता जी से जुड़ी फाइलों को सार्वजनिक किया जाए और मुझे इस बात की खुशी है, यह काम हम लोग कर पाए। मुझे वो दिन याद है, जब नेताजी का सारा परिवार प्रधानमंत्री निवास आया था। हमने मिलकर नेताजी से जुड़ी बहुत सारी बातें की और नेताजी सुभाष बोस को श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुझे खुशी है कि भारत के महान नायकों से जुड़े कई स्थानों को दिल्ली में विकसित करने का प्रयास हुआ है। चाहे वो बाबा साहेब आंबेडकर से जुड़ा 26, अलीपुर रोड हो या फिर सरदार पटेल संग्रहालय हो या वो क्रांति मंदिर हो। अगर आप दिल्ली आएँ तो इन स्थानों को जरूर देखने जाएं।

मेरे प्यारे देशवासियों, आज जब हम नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के बारे में चर्चा कर रहे हैं, और वो भी 'मन की बात' में, तो मैं आपके साथ नेताजी की जिंदगी से जुड़ा एक किस्सा साझा करना चाहता हूँ। मैंने हमेशा से रेडियो को लोगों के साथ जुड़ने का एक महत्वपूर्ण माध्यम माना है उसी तरह नेताजी का भी रेडियो के साथ काफी गहरा नाता था और उन्होंने भी देशवासियों से संवाद करने के लिए रेडियो को चुना था।

1942 में सुभाष बाबू ने आजाद हिन्द रेडियो की शुरुआत की थी और रेडियो के माध्यम से वो 'आजाद हिन्द फौज' के सैनिकों से और देश के लोगों से संवाद किया करते थे। सुभाष बाबू का रेडियो पर बातचीत शुरू करने का एक अलग ही अंदाज़ था। वो बातचीत शुरू करते हुए सबसे पहले कहते थे - This is Subhash Chandra Bose speaking to you over the Azad Hind Radio और इतना सुनते ही श्रोताओं में मानो एक नए जोश, एक नई ऊर्जा का संचार हो उठता।

मुझे बताया गया कि ये रेडियो स्टेशन, साप्ताहिक समाचार बुलेटिन भी प्रसारित करता था, जो अंग्रेज़ी, हिंदी, तमिल, बांग्ला, मराठी, पंजाबी, पश्तो और उर्दू आदि भाषाओं में होते थे। इस रेडियो स्टेशन के संचालन में गुजरात के रहने वाले एम.आर. व्यास जी ने बहुत ही अहम भूमिका निभाई। आजाद हिन्द रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम सामान्य जन के बीच काफी लोकप्रिय थे और उनके कार्यक्रमों से हमारे स्वाधीनता संग्राम के योद्धाओं को भी बहुत ताकत मिली।

इसी क्रांति मंदिर में एक दृश्यकला संग्रहालय भी बनाया गया है। भारतीय कला और संस्कृति बहुत ही आकर्षक तरीके से बताने का प्रयास यह हुआ है। संग्रहालय में 4 ऐतिहासिक exhibitions हैं और वहाँ तीन सदियों पुरानी 450 से अधिक पेंटिंग्स और art works मौजूद हैं। संग्रहालय में अमृता शेरगिल, राजा रवि वर्मा, अवनींद्र नाथ टैगोर, गगनेंद्र नाथ टैगोर, नंदलाल बोस, जामिनी राय, सैलोज़ मुखर्जी जैसे महान कलाकारों के उत्कृष्ट कार्यों का बखूबी प्रदर्शन किया गया है। और मैं आप सबसे विशेष रूप से आग्रह करूंगा कि आप वहाँ जाएँ और गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर जी के कार्यों को अवश्य देखें।

अब आप सोच रहे होंगे कि यहाँ बात कला की हो रही है और मैं आपसे गुरुदेव टैगोर के उत्कृष्ट कार्यों को देखने की बात कर रहा हूँ। आपने अभी तक गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर को एक लेखक और एक संगीतकार के रूप में जाना होगा। लेकिन मैं बताना चाहूंगा कि गुरुदेव एक चित्रकार भी थे। उन्होंने कई विषयों पर पेंटिंग्स बनाई हैं। उन्होंने पशु पक्षियों के भी चित्र बनाए हैं, उन्होंने कई सारे सुंदर परिदृश्यों के भी चित्र बनाए हैं और इतना ही नहीं उन्होंने human characters को भी कला के माध्यम से canvas पर उकेरने का काम किया है। और खास बात ये है कि गुरुदेव टैगोर ने अपने अधिकांश कार्यों को कोई नाम ही नहीं दिया। उनका मानना था कि उनकी पेंटिंग देखने वाला खुद ही उस पेंटिंग को समझे, पेंटिंग में उनके द्वारा दिए गए संदेश को अपने नजरिए से जाने। उनकी पेंटिंग्स को यूरोपीय देशों में, रूस में और अमेरिका में भी प्रदर्शित किया गया है।

मुझे उम्मीद है कि आप क्रांति मंदिर में उनकी पेंटिंग्स को जरूर देखने जाएंगे।

मेरे प्यारे देशवासियों, भारत संतों की भूमि है। हमारे संतों ने अपने विचारों और कार्यों के माध्यम से सद्भाव, समानता और सामाजिक सशक्तिकरण का सन्देश दिया है। ऐसे ही एक संत थे - संत रविदास। 19 फरवरी को रविदास जयंती है। संत रविदास जी के दोहे बहुत प्रसिद्ध हैं। संत रविदास जी कुछ ही पंक्तियों के माध्यम से बड़ा से बड़ा सन्देश देते थे। उन्होंने कहा था -

“जाति-जाति में जाति है,

जो केतन के पात,

रैदास मनुष ना जुड़ सके

जब तक जाति न जात”

जिस प्रकार केले के तने को छिला जाए तो पत्ते के नीचे पत्ता फिर पत्ते के नीचे पत्ता और अंत में कुछ नहीं निकलता है, लेकिन पूरा पेड़ खत्म हो जाता है, ठीक उसी प्रकार इंसान को भी जातियों में बाँट दिया गया है और इंसान रहा ही नहीं है। वे कहा करते थे कि अगर वास्तव में भगवान हर इंसान में होते हैं, तो उन्हें जाति, पंथ और अन्य सामाजिक आधारों पर बांटना उचित नहीं है।

गुरु रविदास जी का जन्म वाराणसी की पवित्र भूमि पर हुआ था। संत रविदास जी ने अपने संदेशों के माध्यम से अपने पूरे जीवनकाल में श्रम और श्रमिक की अहमियत को समझाने का प्रयास किया। ये कहा जाए तो गलत नहीं होगा कि उन्होंने दुनिया को श्रम की प्रतिष्ठा का वास्तविक अर्थ समझाया है। वो कहते थे -

“मन चंगा तो कठौती में गंगा”

अर्थात यदि आपका मन और हृदय पवित्र है तो साक्षात् ईश्वर आपके हृदय में निवास करते हैं। संत रविदास जी के संदेशों ने हर तबके, हर वर्ग के लोगों को प्रभावित किया है। चाहे चितौड़ के महाराजा और रानी हों या फिर मीराबाई हों, सभी उनके अनुयायी थे।

मैं एक बार फिर संत रविदास जी को नमन करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, किरण सिंदर ने MyGov पर लिखा है कि मैं भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम और उसके भविष्य से जुड़े पहलुओं पर प्रकाश डालूँ। वो मुझसे ये भी चाहते हैं कि मैं विद्यार्थियों से अंतरिक्ष कार्यक्रमों में रुचि लेने और कुछ अलग हटकर, आसमान से भी आगे जाकर सोचने का आग्रह करूँ - किरण जी, मैं आपके इस विचार और विशेष रूप से हमारे बच्चों के लिए दिए गए संदेश की सराहना करता हूँ।

कुछ दिन पहले, मैं अहमदाबाद में था, जहाँ मुझे डॉक्टर विक्रम साराभाई की प्रतिमा के अनावरण का सौभाग्य मिला। डॉक्टर विक्रम साराभाई का भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम में एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हमारे space programme में देश के असंख्य युवा वैज्ञानिकों का योगदान है। हम इस बात का गर्व करते हैं कि आज हमारे students द्वारा develop किए गए सैटेलाइट्स और Sounding Rockets अंतरिक्ष तक पहुँच रहे हैं। इसी 24 जनवरी को हमारे विद्यार्थियों द्वारा बनाया गया 'कलाम - सेट' launch किया गया है। ओडिशा में यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए Sounding Rockets ने भी कई कीर्तिमान बनाए हैं। देश आज़ाद होने से लेकर 2014 तक जितने Space Mission हुए हैं, लगभग उतने ही Space Mission की शुरुआत बीते चार वर्षों में हुई हैं। हमने एक ही अंतरिक्ष यान से एक साथ 104 Satellites लॉन्च करने का वर्ल्ड रिकॉर्ड भी बनाया है। हम जल्द ही Chandrayaan-2 अभियान के माध्यम से चाँद पर भारत की मौजूदगी दर्ज कराने वाले हैं।

हमारा देश, स्पेस टेक्नोलॉजी का उपयोग जानमाल की रक्षा में भी बखूबी कर रहा है। चाहे साइक्लोन हो, या फिर रेल और सड़क सुरक्षा, इन सब में स्पेस टेक्नोलॉजी से काफी सहायता मिल रही है। हमारे मछुआरे भाइयों के बीच NAVIC devices बांटे गए हैं, जो उनकी सुरक्षा के साथ-साथ आर्थिक तरक्की में भी सहायक है। हम स्पेस टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल सरकारी सेवाओं की delivery और accountability को और बेहतर करने के लिए कर रहे हैं। “Housing for all” यानि “सबके लिए घर” - इस योजना में 23 राज्यों के करीब 40 लाख घरों को जिओ-टैग किया गया है। इसके साथ ही मनरेगा के तहत करीब साढ़े तीन करोड़ संपत्तियों को भी जिओ-टैग किया गया। हमारे सैटेलाइट्स आज देश की बढ़ती शक्ति का प्रतीक हैं। दुनिया के कई देशों के साथ हमारे बेहतर संबंध में इसका बड़ा योगदान है। साउथ एशिया सैटेलाइट्स तो एक अनूठी पहल रही है, जिसने हमारे पड़ोसी मित्र राष्ट्रों को भी विकास का उपहार दिया है। अपनी बेहद competitive launch services के माध्यम से भारत आज न केवल विकासशील देशों के, बल्कि विकसित देशों के सैटेलाइट्स को भी launch करता है। बच्चों के लिए आसमान और सितारे हमेशा बड़े आकर्षक होते हैं। हमारा Space Programme बच्चों को बड़ा सोचने और उन सीमाओं से आगे बढ़ने का अवसर देता है, जो अब तक असंभव माने जाते थे। यह हमारे बच्चों के लिए सितारों को निहारते रहने के साथ-साथ, नए-नए सितारों की खोज करने की ओर प्रेरित करने का vision है।

मेरे प्यारे देशवासियों, मैं हमेशा कहता हूँ, जो खेले वो खिले और इस बार के खेलो इंडिया में देश के सारे तरुण और युवा खिलाड़ी खेल के सामने आए हैं। जनवरी महीने में पुणे में खेलो इंडिया यूथ गेम्स में 18 गेम्स में करीब 6,000 खिलाड़ियों ने भाग लिया। जब हमारा sports का local ecosystem मजबूत होगा यानी जब हमारा base मजबूत होगा तब ही हमारे युवा देश और दुनिया भर में अपनी क्षमता का सर्वोत्तम प्रदर्शन कर पाएंगे। जब local level पर खिलाड़ी best प्रदर्शन करेगा तब ही वो global level पर भी best प्रदर्शन करेगा। इस बार ‘खेलो इंडिया’ में हर राज्य के खिलाड़ियों ने अपने-अपने स्तर पर अच्छा प्रदर्शन किया है। मेडल जीतने वाले कई खिलाड़ियों का जीवन ज़बर्दस्त प्रेरणा देने वाला है।

मुम्बई में युवा खिलाड़ी आकाश गोरखा ने सिल्वर मेडल जीता। मैं पढ़ रहा था आकाश के पिता रमेश जी, पुणे में एक कॉम्प्लेक्स में बतौर watchman का काम करते हैं। वे अपने परिवार के साथ एक parking shed में रहते हैं। वहीं महाराष्ट्र की अंडर-21 महिला कबड्डी टीम की कप्तान सोनाली हेलवी सतारा की रहने वाली है। उन्होंने बहुत कम उम्र में ही अपने पिता को खो दिया और उनके भाई और उनकी माँ ने सोनाली के हुनर को बढ़ावा दिया। अक्सर ऐसा देखा जाता है कि

कबड्डी जैसे खेलों में बेटियों को इतना बढ़ावा नहीं मिलता है। इसके बावजूद सोनाली ने कबड्डी को चुना और उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। आसनसोल के 10 साल के अभिनवशॉ, खेलो इंडिया यूथ गेम्स में सबसे कम उम्र के स्वर्ण पदक विजेता हैं। कर्नाटक से एक किसान की बेटी अक्षता बासवानी कमती ने weightlifting में स्वर्ण पदक जीता। उन्होंने अपनी जीत का श्रेय अपने पिता को दिया। उनके पिता बेलगाम में एक किसान हैं। जब हम इंडिया के निर्माण की बात कर रहे हैं तो वो युवा शक्ति के संकल्प का ही तो न्यू इंडिया है। खेलो इंडिया की ये कहानियाँ बता रही हैं कि न्यू इंडिया के निर्माण में सिर्फ बड़े शहरों के लोगों का योगदान नहीं है बल्कि छोटे शहरों, गाँव, कस्बों से आने वाले युवाओं-बच्चों, young sporting talents, उनका भी बहुत बड़ा योगदान है।

मेरे प्यारे देशवासियों, आपने कई सारे प्रतिष्ठित ब्यूटी contest के बारे में सुना होगा। पर क्या आपने toilet चमकाने के कॉन्टेस्ट के बारे में सुना है? अरे पिछले लगभग एक महीने से चल रहे इस अनोखे कॉन्टेस्ट में 50 लाख से अधिक शौचालयों ने हिस्सा ले भी लिया है। इस अनोखे contest का नाम है “स्वच्छ सुन्दर शौचालय”। लोग अपने शौचालय को स्वच्छ रखने के साथ-साथ उसे रंग-रौंगन करके, कुछ पेंटिंग्स बना कर सुन्दर भी बना रहे हैं। आपको कश्मीर से कन्याकुमारी कच्छ से कामरूप तक की “स्वच्छ सुन्दर शौचालय” की ढेर सारी photos social media पर भी देखने को मिल जायेंगी। मैं सभी सरपंचों और ग्राम प्रधानों से अपनी पंचायत में इस अभियान का नेतृत्व करने का आवाहन करता हूँ। अपने “स्वच्छ सुन्दर शौचालय” की फोटो को #MylzzatGhar के साथ सोशल मीडिया पर ज़रूर शेयर करें।

साथियों, 2 अक्टूबर, 2014 को हमने अपने देश को स्वच्छ बनाने और खुले में शौच से मुक्त करने के लिए एक साथ मिलकर एक चिर-स्मरणीय यात्रा शुरू की थी। भारत के जन-जन के सहयोग से आज भारत 2 अक्टूबर, 2019 से काफी पहले ही खुले में शौच मुक्त होने की ओर अग्रसर है जिससे कि बापू को उनकी 150वीं जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि दी जा सके।

स्वच्छ भारत के इस चिर-स्मरणीय यात्रा में ‘मन की बात’ के श्रोताओं का भी बहुत बड़ा योगदान रहा है और इसीलिए तो आप सबसे यह बात साझा करते हुए खुशी हो रही है कि पाँच लाख पचास हजार से अधिक गांवों ने और 600 जिलों ने स्वयं को खुले में शौच मुक्त घोषित कर दिया है और ग्रामीण भारत में स्वच्छता coverage 98% को पार कर गया है और करीब नौ करोड़ परिवारों को शौचालय की सुविधा उपलब्ध करायी गयी है।

मेरे नन्हे-मुन्ने साथियों, परीक्षाओं के दिन आने वाले हैं। हिमाचल प्रदेश के निवासी अंशुल शर्मा ने MyGov पर लिखा है कि मुझे परीक्षाओं और Exam Warriors के बारे में बात करनी चाहिए। अंशुल जी, यह मुद्दा उठाने के लिए आपको धन्यवाद। हाँ, कई परिवारों के लिए साल का पहला हिस्सा Exam Season होता है। विद्यार्थी, उनके माता-पिता से लेकर शिक्षक तक, सारे लोग परीक्षाओं से सम्बंधित कार्यों में व्यस्त रहते हैं।

मैं सभी विद्यार्थियों, उनके माता-पिता और शिक्षकों को शुभकामनाएं देता हूँ। मैं इस विषय पर आज ‘मन की बात’ के इस कार्यक्रम में चर्चा करना ज़रूर पसंद करता, लेकिन आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मैं दो दिन बाद ही 29 जनवरी को सवेरे 11 बजे ‘परीक्षा पे चर्चा’ कार्यक्रम में देश भर के विद्यार्थियों के साथ बातचीत करने वाला हूँ। इस बार students के साथ-साथ parents और teachers भी इस कार्यक्रम के हिस्सा बनने वाले हैं। और इस बार कई अन्य देशों के students भी इस कार्यक्रम में भाग लेंगे। इस ‘परीक्षा पे चर्चा’ में परीक्षाओं से जुड़े सभी पहलुओं, विशेष रूप से stress free exam यानी तनाव-रहित परीक्षा के संबंध में अपने नौजवान मित्रों के साथ बहुत सारी बातें करूंगा। मैंने इसके लिए लोगों से input और idea भेजे ने का आग्रह किया था; और मुझे बहुत खुशी है कि MyGov पर बड़ी संख्या में लोग अपने विचार साझा कर रहे हैं। इनमें से कुछ विचारों और सुझावों को मैं निश्चित तौर पर टाउन हॉल प्रोग्राम के दौरान आपके सामने रखूंगा। आप जरूर इस कार्यक्रम का हिस्सा बनें..... सोशल मीडिया और नमो ऐप के माध्यम से आप इसका लाइव telecast भी देख सकते हैं।

मेरे प्यारे देशवासियों। 30 जनवरी पूज्य बापू की पुण्यतिथि है। 11 बजे पूरा देश शहीदों को श्रद्धांजलि देता है। हम भी जहाँ हों दो मिनट शहीदों को जरूर श्रद्धांजलि दें। पूज्य बापू का पुण्य स्मरण करें और पूज्य बापू के सपनों को साकार करना, नये भारत का निर्माण करना, नागरिक के नाते अपने कर्तव्यों का निर्वाह करना - इस संकल्प के साथ, आओ हम आगे बढ़ें। 2019 की इस यात्रा को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाएँ। मेरी आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएँ, बहुत-बहुत धन्यवाद।

\*\*\*\*\*

AKT/SH/VK



**पत्र सूचना कार्यालय  
भारत सरकार  
प्रधानमंत्री कार्यालय**

24-फरवरी-2019 11:34 IST

**'मन की बात' की 53वीं कड़ी में प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ (24.02.2019)**

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार।'मन की बात' शुरू करते हुए आज मन भरा हुआ है। 10 दिन पूर्व, भारत-माता ने अपने वीर सपूतों को खो दिया। इन पराक्रमी वीरों ने, हम सवा-सौ करोड़ भारतीयों की रक्षा में खुद को खपा दिया। देशवासी चैन की नींद सो सकें, इसलिए, इन हमारे वीर सपूतों ने, रात-दिन एक करके रखा था। पुलवामा के आतंकी हमले में, वीर जवानों की शहादत के बाद देश-भर में लोगों को, और लोगों के मन में, आघात और आक्रोश है। शहीदों और उनके परिवारों के प्रति, चारों तरफ संवेदनाएँ उमड़ पड़ी हैं। इस आतंकी हिंसा के विरोध में, जो आवेग आपके और मेरे मन में है, वही भाव, हर देशवासी के अंतर्मन में है और मानवता में विश्वास करने वाले विश्व के भी मानवतावादी समुदायों में है। भारत-माता की रक्षा में, अपने प्राण न्योछावर करने वाले, देश के सभी वीर सपूतों को, मैं नमन करता हूँ। यह शहादत, आतंक को समूल नष्ट करने के लिए हमें निरन्तर प्रेरित करेगी, हमारे संकल्प को और मजबूत करेगी। देश के सामने आयी इस चुनौती का सामना, हम सबको जातिवाद, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद और बाकिसभी मतभेदों को भुलाकर करना है ताकि आतंक के खिलाफ हमारे कदम पहले से कहीं अधिक दृढ़ हों, सशक्त हों और निर्णायक हों। हमारे सशस्त्र बल हमेशा ही अद्वितीय साहस और पराक्रम का परिचय देते आये हैं। शांति की स्थापना के लिए जहाँ उन्होंने अद्भुत क्षमता दिखायी है वहीं हमलावरों को भी उन्हीं की भाषा में जबाब देने का काम किया है। आपने देखा होगा कि हमले के 100 घंटे के भीतर ही किस प्रकार से कदम उठाये गये हैं। सेना ने आतंकवादियों और उनके मददगारों के समूल नाश का संकल्प ले लिया है। वीर सैनिकों की शहादत के बाद, मीडिया के माध्यम से उनके परिजनों की जो प्रेरणादायी बातें सामने आयी हैं उसने पूरे देश के हौसले को और बल दिया है। बिहार के भागलपुर के शहीद रतन ठाकुर के पिता रामनिरंजन जी ने, दुःख की इस घड़ी में भी जिस जज़्बे का परिचय दिया है, वह हम सबको प्रेरित करता है। उन्होंने कहा कि वे अपने दूसरे बेटे को भी दुश्मनों से लड़ने के लिए भेजेंगे और जरूरत पड़ी तो खुद भी लड़ने जाएंगे। ओडिशा के जगतसिंह पुर के शहीद प्रसन्ना साहू की पत्नी मीना जी के अदम्य साहस को पूरा देश सलाम कर रहा है। उन्होंने अपने इकलौते बेटे को भी CRPF join कराने का प्रण लिया है। जब तिरंगे में लिपटे शहीद विजय शोरेन का शव झारखण्ड के गुमला पहुँचा तो मासूम बेटे ने यही कहा कि मैं भी फौज़ में जाऊँगा। इस मासूम का जज़्बा आज भारतवर्ष के बच्चे-बच्चे की भावना को व्यक्त करता है। ऐसी ही भावनाएँ, हमारे वीर, पराक्रमी शहीदों के घर-घर में देखने को मिल रही हैं। हमारा एक भी वीर शहीद इसमें अपवाद नहीं है, उनका परिवार अपवाद नहीं है। चाहे वो देवरिया के शहीद विजय मौर्य का परिवार हो, कांगड़ा के शहीद तिलकराज के माता-पिता हों या फिर कोटा के शहीद हेमराज का छः साल का बेटा हो - शहीदों के हर परिवार की कहानी, प्रेरणा से भरी हुई है। मैं युवा-पीढ़ी से अनुरोध करूँगा कि वो, इन परिवारों ने जो जज़्बा दिखाया है, जो भावना दिखायी है उसको जानें, समझने का प्रयास करें। देशभक्ति क्या होती है, त्याग-तपस्या क्या होती है - उसके लिए हमें इतिहास की पुरानी घटनाओं की ओर जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। हमारी आँखों के सामने, ये जीते-जागते उदहारण हैं और यही उज्ज्वल भारत के भविष्य के लिए प्रेरणा का कारण हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, आजादी के इतने लम्बे समय तक, हम सबको, जिस war memorial का इन्तजार था, वह अब खत्म होने जा रहा है। इसके बारे में देशवासियों की जिज्ञासा, उत्सुकता बहुत स्वाभाविक है। Narendra Modi App पर उड़ुपी, कर्नाटक के श्री ओंकार शेट्टी जी ने National War Memorial तैयार होने पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की है। मुझे आश्चर्य भी होता था और पीड़ा भी कि भारत में कोई National War Memorial नहीं था। एक ऐसा मेमोरियल, जहाँ राष्ट्र की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर करने वाले वीर जवानों की शौर्य-गाथाओं को संजो कर रखा जा सके। मैंने निश्चय किया कि देश में, एक ऐसा स्मारक अवश्य होना चाहिये।

हमने National War Memorial के निर्माण का निर्णय लिया और मुझे खुशी है कि यह स्मारक इतने कम समय में बनकर तैयार हो चुका है। कल, यानि 25 फरवरी को, हम करोड़ों देशवासी इस राष्ट्रीय सैनिक स्मारक को, हमारी सेना को सुपुर्द करेंगे। देश अपना कर्ज चुकाने का एक छोटा सा प्रयास करेगा।

दिल्ली के दिल यानि वो जगह, जहाँ पर इंडिया गेट और अमर जवान ज्योति मौजूद है बस उसके ठीक नज़दीक में, ये एक नया स्मारक बनाया गया है। मुझे विश्वास है ये देशवासियों के लिए राष्ट्रीय सैनिक स्मारक जाना किसी तीर्थ स्थल जाने के समान होगा। राष्ट्रीय सैनिक स्मारक स्वतंत्रता के बाद सर्वोच्च बलिदान देने वाले जवानों के प्रति राष्ट्र की कृतज्ञता का

प्रतीक है। स्मारक का डिजाइन हमारे अमर सैनिकों के अदम्य साहस को प्रदर्शित करता है। राष्ट्रीय सैनिक स्मारक का concept, Four Concentric Circles यानी चार चक्रों पर केंद्रित है, जहाँ एक सैनिक के जन्म से लेकर शहादत तक की यात्रा का चित्रण है। अमर चक्र की लौ, शहीद सैनिक की अमरता का प्रतीक है। दूसरा circle वीरता चक्र का है जो सैनिकों के साहस और बहादुरी को प्रदर्शित करता है। यह एक ऐसी gallery है जहाँ दीवारों पर सैनिकों की बहादुरी के कारनामों को उकेरा गया है। इसके बाद, त्याग चक्र है यह circle सैनिकों के बलिदान को प्रदर्शित करता है। इसमें देश के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले सैनिकों के नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखे गए हैं। इसके बाद रक्षक चक्र, सुरक्षा को प्रदर्शित करता है। इस circle में घने पेड़ों की पंक्ति है। ये पेड़ सैनिकों के प्रतीक हैं और देश के नागरिकों को यह विश्वास दिलाते हुए सन्देश दे रहे हैं कि हर पहर सैनिक सीमा पर तैनात हैं और देशवासी सुरक्षित हैं। कुल मिला कर देखें तो राष्ट्रीय सैनिक स्मारक की पहचान एक ऐसे स्थान के रूप में बनेगी जहाँ लोग देश के महान शहीदों के बारे में जानकारी लेने, अपनी कृतज्ञता प्रकट करने, उन पर शोध करने के उद्देश्य से आयेंगे। यहाँ उन बलिदानियों की कहानी है जिन्होंने देश के लिए अपने प्राण नयाँछावर कर दिए हैं ताकि हम जीवित रह सकें ताकि देश सुरक्षित रहे और विकास कर सके। देश के विकास में हमारे सशस्त्र बलों, पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों के महान योगदान को शब्दों में अभिव्यक्त करना संभव नहीं है। पिछले साल अक्टूबर में मुझे National Police Memorial को भी देश को समर्पित करने का सौभाग्य मिला था। वह भी हमारे उस विचार का प्रतिबिम्ब था जिसके तहत हम मानते हैं कि देश को उन पुरुष और महिला पुलिसकर्मियों के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए जो अनवरत हमारी सुरक्षा में जुटे रहते हैं। मैं आशा करता हूँ कि आप राष्ट्रीय सैनिक स्मारक और National Police Memorial को देखने जरूर जायेंगे। आप जब भी जाएँ वहाँ ली गयी अपनी तस्वीरों को social media पर अवश्य share करें ताकि दूसरों लोगों को भी इससे प्रेरणा मिले और वे भी इस पवित्र स्थल, इस memorial को देखने के लिए उत्सुक हों।

मेरे प्यारे देशवासियों, 'मन की बात' के लिए आपके हजारों पत्र और comment, मुझे अलग-अलग माध्यमों से पढ़ने को मिलते रहते हैं। इस बार जब मैं आपके comment पढ़ रहा था तब मुझे 'आतिश मुखोपाध्याय जी' की एक बहुत ही रोचक टिप्पणी मेरे ध्यान में आई। उन्होंने लिखा है कि वर्ष 1900 में 3 मार्च को, अंग्रेजों ने बिरसा मुंडा को गिरफ्तार किया था तब उनकी उम्र सिर्फ 25 साल की थी ये संयोग ही है कि 3 मार्च को ही जमशेदजी टाटा की जयंती भी है। और वे आगे लिखते हैं ये दोनों व्यक्तित्व पूरी तरह से दो अलग-अलग पारिवारिक पृष्ठभूमि से हैं जिन्होंने झारखण्ड की विरासत और इतिहास को समृद्ध किया। 'मन की बात' में 'बिरसा मुंडा' और 'जमशेदजी टाटा' को श्रद्धांजलि देने का एक प्रकार से झारखण्ड के गौरवशाली इतिहास और विरासत को नमन करने जैसा है। आतिश जी मैं आपसे सहमत हूँ। इन दो महान विभूतियों ने झारखण्ड का नहीं पूरे देश का नाम बढ़ाया है। पूरा देश उनके योगदान के लिए कृतज्ञ है। आज, अगर हमारे नौजवानों को मार्गदर्शन के लिए किसी प्रेरणादायी व्यक्तित्व की जरूरत है तो वह है भगवान 'बिरसा मुंडा'। अंग्रेजों ने छिप कर, बड़ी ही चालाकी से उन्हें उस वक्त पकड़ा था जब वे सो रहे थे। क्या आप जानते हैं कि उन्होंने ऐसी कायरतापूर्ण कार्यवाही का सहारा क्यों लिया ? क्योंकि इतना बड़ा साम्राज्य खड़ा करने वाले अंग्रेज भी उनसे भयभीत रहते थे। भगवान 'बिरसा मुंडा' ने सिर्फ अपने पारंपरिक तीर-कमान से ही बंदूकों और तोपों से लैस अंग्रेजी शासन को हिलाकर रख दिया था। दरअसल, जब लोगों को एक प्रेरणादायी नेतृत्व मिलता है तो फिर हथियारों की शक्ति पर लोगों की सामूहिक इच्छाशक्ति भारी पड़ती है। भगवान 'बिरसा मुंडा' ने अंग्रेजों से ना केवल राजनीतिक आज़ादी के लिए संघर्ष किया बल्कि आदिवासियों के सामाजिक और आर्थिक अधिकारों के लिए भी लड़ाई लड़ी। अपने छोटे से जीवन में उन्होंने ये सब कर दिखाया। वंचितों और शोषितों के अंधेरे से भरे जीवन में सूरज की तरह चमक बिखेरी। भगवान बिरसा मुंडा ने 25 वर्ष की अल्प आयु में ही अपना बलिदान दे दिया। बिरसा मुंडा जैसे भारत माँ के सपूत, देश के हर भाग में हुए हैं। शायद हिंदुस्तान का कोई कोना ऐसा होगा कि सदियों तक चली हुई आज़ादी की इस जंग में, किसी ने योगदान ना दिया हो। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि इनके त्याग, शौर्य और बलिदान की कहानियाँ नई पीढ़ी तक पहुँची ही नहीं। अगर, भगवान 'बिरसा मुंडा' जैसे व्यक्तित्व ने हमें अपने अस्तित्व का बोध कराया तो जमशेदजी टाटा जैसी शख्सियत ने देश को बड़े-बड़े संस्थान दिए। जमशेदजी टाटा सही मायने में एक दूरदृष्टा थे, जिन्होंने ना केवल भारत के भविष्य को देखा बल्कि उसकी मजबूत नींव भी रखी। वे भलीभाँति जानते थे कि भारत को science, technology और industry का hub बनाना भविष्य के लिए आवश्यक है। ये उनका ही vision था जिसके परिणामस्वरूप Tata Institute of Science की स्थापना हुई जिसे अब Indian Institute of Science कहा जाता है। यही नहीं उन्होंने Tata Steel जैसे कई विश्वस्तरीय संस्थानों को और उद्योगों की भी स्थापना की। 'जमशेदजी टाटा' और 'स्वामी विवेकानंद जी' की मुलाकात अमेरिकी यात्रा के दौरान ship में हुई थी, तब उन दोनों की चर्चा में एक महत्वपूर्ण topic भारत में science और technology के प्रचार-प्रसार से जुड़ा हुआ था। कहते हैं... इसी चर्चा से Indian Institute of Science की नींव पड़ी।

मेरे प्यारे देशवासियों, हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी भाई देसाई का जन्म 29 फरवरी को हुआ था। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि यह दिन 4 वर्ष में एक बार ही आता है। सहज, शांतिपूर्ण व्यक्तित्व के धनी, मोरारजी भाई देश के सबसे अनुशासित नेताओं में से थे। स्वतंत्र भारत में संसद में सबसे अधिक बजट पेश करने का record मोरारजी भाई देसाई के ही नाम है। मोरारजी देसाई ने उस कठिन समय में भारत का कुशल नेतृत्व किया, जब देश के लोकतान्त्रिक ताने-



बाने को खतरा था। इसके लिए हमारी आने वाली पीढ़ियाँ भी उनकी आभारी रहेंगी। मोरारजी भाई देसाई ने लोकतंत्र की रक्षा के लिए आपातकाल के खिलाफ आन्दोलन में खुद को झोंक दिया। इसके लिए उन्हें वृद्धावस्था में भी भारी कीमत चुकानी पड़ी। उस समय की सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया। लेकिन 1977 में जब जनता पार्टी चुनाव जीती तो वे देश के प्रधानमंत्री बने। उनके कार्यकाल के दौरान ही 44वाँ संविधान संशोधन लाया गया। यह महत्वपूर्ण इसलिए है क्योंकि emergency के दौरान जो 42वाँ संशोधन लाया गया था, जिसमें सुप्रीमकोर्ट की शक्तियों को कम करने और दूसरे ऐसे प्रावधान थे, जो हमारे लोकतान्त्रिक मूल्यों का हनन करते थे - उनको वापिस किया गया। जैसे 44वें संशोधन के जरिये संसद और विधानसभाओं की कार्यवाही का समाचार पत्रों में प्रकाशन का प्रावधान किया गया। इसी के तहत, सुप्रीमकोर्ट की कुछ शक्तियों को बहाल किया गया। इसी संशोधन में यह भी प्रावधान किया गया कि संविधान के अनुच्छेद 20 और 21 के तहत मिले मौलिक-अधिकारों का आपातकाल के दौरान भी हनन नहीं किया जा सकता है। पहली बार ऐसी व्यवस्था की गई कि मंत्रिमंडल की लिखित अनुशंसा पर ही राष्ट्रपति आपातकाल की घोषणा करेंगे, साथ ही यह भी तय किया गया कि आपातकाल की अवधि को एक बार में छः महीने से अधिक नहीं बढ़ाया जा सकता है। इस तरह से मोरारजी भाई ने यह सुनिश्चित किया कि आपातकाल लागू कर, 1975 में जिस प्रकार लोकतंत्र की हत्या की गई थी, वह भविष्य में फिर दोहराया ना जा सके। भारतीय लोकतंत्र के महात्म्य को बनाए रखने में उनके अमूल्य योगदान को, आने वाली पीढ़ियाँ हमेशा याद रखेंगी। एक बार फिर ऐसे महान नेता को मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, हर साल की तरह इस बार भी पद्म अवार्ड को लेकर लोगों में बड़ी उत्सुकता थी। आज हम एक न्यू इंडिया की ओर अग्रसर हैं। इसमें हम उन लोगों का सम्मान करना चाहते हैं जो grass-root level पर अपना कामनिष्काम भाव से कर रहे हैं। अपने परिश्रम के बल पर अलग-अलग तरीके से दूसरों के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला रहे हैं। दरअसल वे सच्चे कर्मयोगी हैं, जो जनसेवा, समाजसेवा और इन सबसे से बढ़कर राष्ट्रसेवा में निःस्वार्थ जुटे रहते हैं। आपने देखा होगा जब पद्म अवार्ड की घोषणा होती है तो लोग पूछते हैं कि ये कौन है ? एक तरह से इसे मैं बहुत बड़ी सफलता मानता हूँ क्योंकि ये वो लोग हैं जो T.V., Magazine या अखबारों के front page पर नहीं हैं। ये चकाचौंध की दुनिया से दूर हैं, लेकिन ये ऐसे लोग हैं, जो अपने नाम की परवाह नहीं करते बस जमीनी स्तर पर काम करने में विश्वास रखते हैं। 'योगः कर्मसु कौशलम्' गीता के सन्देश को वो एक प्रकार से जीते हैं। मैं ऐसे ही कुछ लोगों के बारे में आपको बताना चाहता हूँ। ओडिशा के दैतारी नायक के बारे में आपने जरूर सुना होगा उन्हें 'Canal Man of the Odisha' यूँ ही नहीं कहा जाता, दैतारी नायक ने अपने गाँव में अपने हाथों से पहाड़ काटकर तीन किलोमीटर तक नहर का रास्ता बना दिया। अपने परिश्रम से सिंचाई और पानी की समस्या हमेशा के लिए खत्म कर दी। गुजरात के अब्दुल गफूर खत्री जी को ही लीजिए, उन्होंने कच्छ के पारंपरिक रोगन पेंटिंग को पुनर्जीवित करने का अद्भुत कार्य किया। वे इस दुर्लभ चित्रकारी को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का बड़ा कार्य कर रहे हैं। अब्दुल गफूर द्वारा बनाई गई 'Tree of Life' कलाकृति को ही मैंने अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा को उपहार में दिया था। पद्म पुरस्कार पाने वालों में मराठावाड़ा के शब्बीर सैय्यद गौ-माता के सेवक के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने जिस प्रकार अपना पूरा जीवन गौमाता की सेवा में खपा दिया ये अपने आप में अनूठा है। मदुरै चिन्ना पिल्लई वही शख्सियत हैं, जिन्होंने सबसे पहले तमिलनाडु में कलन्जियम आन्दोलन के जरिए पीड़ितों और शोषितों को सशक्त करने का प्रयास किया। साथ ही समुदाय आधारित लघु वित्तीय व्यवस्था की शुरुआत की। अमेरिका की Tao Porchon-Lynch के बारे में सुनकर आप सुखद आश्चर्य से भर जाएंगे। Lynch आज योग की जीती-जागती संस्था बन गई है। सौ वर्ष की उम्र में भी वे दुनिया भर के लोगों को योग का प्रशिक्षण दे रही हैं और अब तक डेढ़ हजार लोगों को योग शिक्षक बना चुकी हैं। झारखण्ड में 'Lady Tarzan' के नाम से विख्यात जमुना टुडू ने टिम्बर माफिया और नक्सलियों से लोहा लेने का साहसिक काम किया उन्होंने न केवल 50 हेक्टेयर जंगल को उजड़ने से बचाया बल्कि दस हजार महिलाओं को एकजुट कर पेड़ों और वन्यजीवों की सुरक्षा के लिए प्रेरित किया। ये जमुना जी के परिश्रम का ही प्रताप है कि आज गाँववाले हर बच्चे के जन्म पर 18 पेड़ और लड़की की शादी पर 10 पेड़ लगाते हैं। गुजरात की मुक्ताबेन पंकजकुमार दगली की कहानी आपको प्रेरणा से भर देगी, खुद दिव्यांग होते हुए भी उन्होंने दिव्यांग महिलाओं के उत्थान के लिए जो कार्य किए, ऐसा उदाहरण मिलना मुश्किल है। चक्षु महिला सेवाकुन्ज नाम की संस्था की स्थापना कर वे नेत्रहीन बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने के पुनीत कार्य में जुटी हैं। बिहार के मुजफ्फरपुर की किसान चाची, यानि राजकुमारी देवी की कहानी बहुत ही प्रेरक है। महिला सशक्तिकरण और खेती को लाभकारी बनाने की दिशा में उन्होंने एक मिसाल पेश की है। किसान चाची ने अपने इलाके की 300 महिलाओं को 'Self Help Group' से जोड़ा और आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने गाँव की महिलाओं को खेती के साथ ही रोजगार के अन्य साधनों का प्रशिक्षण दिया। खास बात यह है कि उन्होंने खेती के साथ technology को जोड़ने का काम किया और मेरे देशवासियों, शायद पहली बार ऐसा हुआ है कि इस वर्ष जो पद्म पुरस्कार दिए गए उसमें 12 किसानों को पद्म पुरस्कार मिले हैं। आमतौर पर कृषि जगत से जुड़े हुए बहुत ही कम लोग और प्रत्यक्ष किसानी करने वाले बहुत ही कम लोग पद्मश्री की सूची में आये हैं। ये अपने आप में, ये बदलते हुए हिन्दुस्तान की जीती-जागती तस्वीर है।

मेरे प्यारे देशवासियों, मैं आज आप सब के साथ एक ऐसे दिल को छूने वाले अनुभव के बारे में बात करना चाहता हूँ जो पिछले कुछ दिनों से मैं महसूस कर रहा हूँ। आजकल देश में जहाँ भी जा रहा हूँ, मेरा प्रयास रहता है कि 'आयुष्मान भारत'

की योजना PM-JAY यानि PM जन आरोग्य योजना के कुछ लाभार्थियों से मिलूं। कुछ लोगों से बातचीत करने का अवसर मिला है। अकेली माँ उसके छोटे बच्चे पैसों के अभाव में इलाज नहीं करवा पा रही थी। इस योजना से उसका इलाज हुआ और वो स्वस्थ हो गई। घर का मुखिया, मेहनत-मजदूरी करके अपने परिवार की देखभाल करने वाला accident का शिकार हो गया, काम नहीं कर पा रहा था - इस योजना से उसको लाभ मिला और वो पुनः स्वस्थ हुआ, नई ज़िन्दगी जीने लगा।

भाइयों-बहनों पिछले पाँच महीनों में लगभग बारह लाख गरीब परिवार इस योजना का लाभ उठा चुके हैं। मैंने पाया कि गरीब के जीवन में इससे कितना बड़ा परिवर्तन आ रहा है। आप सब भी यदि किसी भी ऐसे गरीब व्यक्ति को जानते हैं जो पैसों के अभाव में इलाज नहीं करा पा रहा हो। तो उसे इस योजना के बारे में अवश्य बताइये। यह योजना हर ऐसे गरीब व्यक्ति के लिए ही है।

मेरे प्यारे देशवासियो, स्कूलों में परीक्षा का समय शुरू होने ही वाला है। देशभर में अलग-अलग शिक्षा बोर्ड अगले कुछ हफ्तों में दसवीं और बारहवीं कक्षा के board के इम्तिहान के लिए प्रक्रिया प्रारंभ करेंगे। परीक्षा देने वाले सभी विद्यार्थियों को, उनके अभिभावकों को और सभी teachers को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ हैं।

कुछ दिन पहले दिल्ली में 'परीक्षा पे चर्चा' का एक बहुत बड़ा आयोजन Town Hall के format में हुआ। इस Town Hall कार्यक्रम में मुझे technology के माध्यम से, देश-विदेश के करोड़ों students के साथ, उनके अभिभावकों के साथ, teachers के साथ, बात करने का अवसर मिला। 'परीक्षा पे चर्चा' इसकी एक विशेषता यह रही कि परीक्षा से जुड़े विभिन्न विषयों पर खुल कर बातचीत हुई। कई ऐसे पहलू सामने आए जो निश्चित रूप से विद्यार्थियों के लिए लाभदायक हो सकते हैं। सभी विद्यार्थी, उनके शिक्षक, माता-पिता YouTube पर इस पूरे कार्यक्रम की recording देख सकते हैं, तो आने वाली परीक्षा के लिए मेरे सभी exam warriors को ढ़ेरो शुभकामनाएँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, भारत की बात हो और त्यौहार की बात न हो। ऐसा हो ही नहीं सकता। शायद ही हमारे देश में कोई दिन ऐसा नहीं होता है, जिसका महत्व ही न हो, जिसका कोई त्यौहार न हो। क्योंकि हजारों वर्ष पुरानी संस्कृति की ये विरासत हमारे पास है। कुछ दिन बाद महाशिवरात्रि का पर्व आने वाला है और इस बार तो शिवरात्रि सोमवार को है और जब शिवरात्रि सोमवार को हो तो उसका एक विशेष महत्व हमारे मन-मंदिर में छा जाता है। इस शिवरात्रि के पावन पर्व पर मेरी आप सब को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, कुछ दिन पहले मैं काशी गया था। वहाँ मुझे दिव्यांग भाई-बहनों के साथ समय बिताने का मौका मिला। उनसे कई विषयों पर चर्चा हुई और उनका आत्मविश्वास वाकई प्रभावित करने वाला था - प्रेरक था। बातचीत के दौरान उनमें से एक प्रज्ञाचक्षु नौजवान से जब मैं बात कर रहा था तो उसने कहा मैं तो stage artist हूँ। मैं मनोरंजन के कार्यक्रमों में mimicry करता हूँ, तो मैंने ऐसे ही पूछ लिया आप किसकी mimicry करते हो ? तो उसने बताया कि मैं प्रधानमंत्री की mimicry करता हूँ। तो मैंने उनसे कहा ज़रा कर के दिखाइये और मेरे लिए बड़ा सुखद आश्चर्य था, तो उन्होंने 'मन की बात' में जिस प्रकार से मैं बात करता हूँ उसी की पूरी mimicry की, और 'मन की बात' की ही mimicry की। मुझे ये सुनकर बहुत अच्छा लगा कि लोग न सिर्फ 'मन की बात' सुनते हैं बल्कि उसे कई अवसरों पर याद भी करते हैं। मैं सचमुच में उस दिव्यांग नौजवान की शक्ति से बहुत ही प्रभावित हुआ।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' कार्यक्रम के माध्यम से आप सब से जुड़ना मेरे लिए एक अनोखा अनुभव रहा है। रेडियो के माध्यम से मैं एक तरह से करोड़ों परिवारों से हर महीने रूबरू होता हूँ। कई बार तो आप सब से बात करते, आपकी चिठ्ठियाँ पढ़ते या आपके फोन पर भेजे गए विचार सुनते मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि आपने मुझे अपने परिवार का ही हिस्सा मान लिया है। यह मेरे लिए एक बहुत ही सुखद अनुभूति रही है।

दोस्तों, चुनाव लोकतंत्र का सबसे बड़ा उत्सव होता है। अगले दो महीने, हम सभी चुनाव की गहमा-गहमी में व्यस्त होंगे। मैं स्वयं भी इस चुनाव में एक प्रत्याशी रहूँगा। स्वस्थ लोकतांत्रिक परंपरा का सम्मान करते हुए अगली 'मन की बात' मई महीने के आखरी रविवार को होगी। यानि कि मार्च महीना, अप्रैल महीना और पूरा मई महीना ये तीन महीने की सारी हमारी जो भावनाएँ हैं उन सबको मैं चुनाव के बाद एक नए विश्वास के साथ आपके आशीर्वाद की ताकत के साथ फिर एक बार 'मन की बात' के माध्यम से हमारी बातचीत के सिलसिले का आरम्भ करूँगा और सालों तक आपसे 'मन की बात' करता रहूँगा। फिर एक बार आप सबका हृदय से बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ।

\*\*\*\*\*

AKT/SH/VK

प्रधानमंत्री कार्यालय

# ‘मन की बात 2.0’ की तीसरी कड़ी में प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ (29.09.2019)

प्रविष्टि तिथि: 29 SEP 2019 12:33PM by PIB Delhi

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार | साथियो, आज की ‘मन की बात’ में, देश की उस महान शख्सियत, मैं, उनकी भी बात करूँगा | हम सभी हिन्दुस्तानवासियों के दिल में, उनके प्रति बहुत सम्मान है, बहुत लगाव है | शायद ही, हिन्दुस्तान का कोई नागरिक होगा, जो, उनके प्रति आदर ना रखता हो, सम्मान ना करता हो | वो उम्र में हम सभी से बहुत बड़ी हैं, और देश के अलग-अलग पड़ावों, अलग-अलग दौर की, वो साक्षी हैं | हम उन्हें दीदी कहते हैं – ‘लता दीदी’ | वो, इस 28 सितम्बर को 90 वर्ष की हो रही हैं | विदेश यात्रा पर निकलने से पहले, मुझे, दीदी से फ़ोन पर बात करने का सौभाग्य मिला था | ये बातचीत वैसे ही थी, जैसे, बहुत दुलार में, छोटा भाई, अपनी बड़ी बहन से बात करता है | मैं, इस तरह के व्यक्तिगत संवाद के बारे में, कभी बताता नहीं, लेकिन आज चाहता हूँ, कि, आप भी, लता दीदी की बातें सुनें, उस बातचीत को सुनें | सुनिये, कि कैसे, आयु के इस पड़ाव में भी लता दीदी, देश से जुड़ी तमाम बातों के लिये उत्सुक हैं, तत्पर हैं, और जीवन का संतोष भी, भारत की प्रगति में है, बदलते हुई भारत में है, नई ऊँचाईयों को छू रहे भारत में है |

मोदी जी : लता दीदी, प्रणाम! मैं नरेंद्र मोदी बोल रहा हूँ |

लता जी : प्रणाम,

मोदी जी : मैंने फ़ोन इसलिए किया, क्योंकि, इस बार आपके जन्मदिन पर....

लता जी : हाँ हाँ

मोदी जी : मैं हवाई जहाज में travelling कर रहा हूँ |

लता जी : अच्छा |

मोदी जी : तो मैंने सोचा जाने से पहले ही

लता जी : हाँ हाँ

मोदी जी : आपको जन्मदिन की बहुत-बहुत शुभकामनाएं, अग्रिम

बधाई दे दूँ। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहे, आपका आशीर्वाद हम सभी पर बना रहे, बस यही प्रार्थना और आपको प्रणाम करने के लिए मैंने, अमेरिका जाने से पहले ही आपको फ़ोन कर दिया।

लता जी : आपका फ़ोन आयेगा, यह सुन के ही मैं बहुत, ये हो

गयी थी। आप, जा के कब वापस आर्येंगे।

मोदी जी : मेरा आना होगा 28 late night और 29 morning और

तब आपका जन्मदिन हो गया होगा।

लता जी : अच्छा, अच्छा। जन्म दिन तो क्या मनायेंगे, और

बस घर में ही सब लोग,

मोदी जी : दीदी देखिये मुझे तो

लता जी : आपका आशीर्वाद मिले तो

मोदी जी : अरे आपका आशीर्वाद हम मांगते हैं, आप तो हमसे बड़े हैं।

लता जी : उम्र से बड़ा तो बहुत, कुछ लोग होते हैं, पर

अपने काम से जो बड़ा होता है, उसका आशीर्वाद मिलना

बहुत बड़ी चीज होती है।

मोदी जी : दीदी, आप उम्र में भी बड़ी हैं और काम में भी बड़ी हैं

और आपने ये जो सिद्धी पायी है, ये साधना और तपस्या

करके पायी है।

लता जी : जी, मैं तो सोचती हूँ कि मेरे माता-पिता का आशीर्वाद

है, और सुनने वालों का आशीर्वाद है। मैं कुछ नहीं हूँ।

मोदी जी : जी, यही आपकी नम्रता जो है, ये हम नयी पीढ़ी के  
सबके लिये, ये बहुत बड़ी शिक्षा है, बहुत बड़ा हमारे  
लिये inspiration है कि आपने जीवन में इतना सब कुछ  
Clear करने के बाद भी, आपके मात-पिता के संस्कार  
और उस नम्रता को हमेशा ही प्राथमिकता दी है।

लता जी : जी।

मोदी जी : और मुझे तो खुशी है कि जब आप गर्व से कहती हो  
कि माँ गुजराती थी .....

लता जी : जी।

मोदी जी : और मैं जब भी आपके पास आया

लता जी : जी।

मोदी जी : आपने मुझे कुछ-ना-कुछ गुजराती खिलाया।

लता जी : जी। आप क्या हैं, आपको खुद पता नहीं है।  
मैं जानती हूँ कि आपके आने से भारत का चित्र बदल रहा  
है और वो, वही मुझे बहुत खुशी होती है। बहुत  
अच्छा लगता है।

मोदी जी : बस दीदी, आपके आशीर्वाद बने रहें, पूरे देश पर आपके  
आशीर्वाद बने रहे, और, हम जैसे लोग कुछ-ना-कुछ  
अच्छा करते रहें, मुझे आपने हमेशा प्रेरणा दी है।  
आपकी चिट्ठी भी मुझे मिलती रहती है और आपकी  
कुछ-ना-कुछ भेंट-सौगात भी मुझे मिलती रहती है तो ये

एक अपनापन, जो एक, पारिवारिक नाता है उसका एक विशेष आनंद मुझे होता है ।

लता जी : जी, जी । नहीं मैं आपको बहुत तकलीफ नहीं देना चाहती हूँ, क्योंकि, मैं देख रही हूँ, जानती हूँ, कि आप कितने busy होते हैं और आपको कितना काम होता है । क्या-क्या सोचना पड़ता है । जब, आप जा के अपनी माता जी को पाँव छू के आये, देखा तो मैंने भी किसी को भेजा था उनके पास और उनका आशीर्वाद लिया।

मोदी जी : हाँ ! मेरी माँ को याद था और वो मुझे बता रही थी ।

लता जी : जी ।

मोदी जी : हाँ ।

लता जी : और टेलीफोन पर उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया, तो मुझे, बहुत अच्छा लगा

मोदी जी : हमारी माँ बहुत प्रसन्न थी, आपके इस प्यार के कारण ।

लता जी : जी जी ।

मोदी जी : और मैं आपका बहुत आभारी हूँ कि आप हमेशा मेरी चिंता करती हैं । और फिर एक बार मैं आपको जन्मदिन की बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ ।

लता जी : जी ।

मोदी जी : इस बार Mumbai आया तो मन करता था कि रुबरू आ जाऊं

लता जी : जी, जी जरूर ।

मोदी जी : लेकिन समय की इतनी व्यस्तता थी कि मैं आ नहीं पाया

लता जी : जी

मोदी जी : लेकिन मैं बहुत ही जल्द आऊँगा

लता जी : जी ।

मोदी जी : और घर आ करके कुछ गुजराती चीजें आपके हाथ से खाऊँगा ।

लता जी : जी जरूर, जरूर, जरूर । ये तो मेरा सौभाग्य होगा ।

मोदी जी : प्रणाम, दीदी ।

लता जी : प्रणाम ।

मोदी जी : बहुत शुभकामनाएं । आपको

लता जी : बहुत-बहुत प्रणाम ।

मोदी जी : प्रणाम जी ।

मेरे प्यारे देशवासियों, नवरात्रि के साथ ही, आज से, त्योहारों का माहौल फिर एक बार, नयी उमंग, नयी ऊर्जा, नया उत्साह, नए संकल्प से भर जाएगा । festival season है ना ! आगे कई हफ्तों तक, देश भर में, त्योहारों की रौनक रहेगी । हम सभी, नवरात्रि महोत्सव, गरबा, दुर्गा-पूजा, दशहरा, दीवाली, भैया-दूज, छठ-पूजा, अनगिनत त्यौहार मनायेंगे । आप सभी को, आने वाले त्योहारों की ढेर सारी शुभकामनाएं । त्यौहारों में, परिवार के सब लोग साथ आयेंगे । घर खुशियों से भरे होंगे, लेकिन, आपने देखा होगा, कि, हमारे आस-पास भी, बहुत सारे ऐसे लोग हैं, जो, इन त्योहारों की खुशियों से वंचित रह जाते हैं और इसी को तो कहते हैं – ‘चिराग तले अन्धेरा’ । शायद, ये कहावत, सिर्फ शब्द नहीं हैं, हम लोगों के लिए, एक आदेश है,

एक दर्शन है, एक प्रेरणा है। सोचिये, एक तरफ, कुछ घर रोशनी से जगमगाते हैं, वहीं, दूसरी तरफ, उसी के सामने, आस-पास कुछ लोगों के घरों में, अन्धेरा छाया होता है। कुछ घरों में, मिठाइयाँ खराब हो रही होती हैं, तो, कुछ घरों में, बच्चे, मिठाई को तरसते हैं। कहीं अलमारी में कपड़े रखने की जगह नहीं होती, तो कहीं, तन ढकने की, मसक्कत (मशक्कत) चलती है। क्या? इसे चिराग तले अन्धेरा नहीं कहेंगे - यही तो चिराग तले अन्धेरा है। इन त्योहारों का असली आनंद तभी है, जब, यह अन्धेरा छूटे, ये अन्धेरा कम हो - उजियाला फैले। हम, वहाँ भी खुशियाँ बाँटे, जहाँ, अभाव है, और, ये हमारा स्वभाव भी हो। हमारे घरों में, मिठाइयों की, कपड़ों की, gifts की, जब delivery in हो, तो एक पल, delivery out के बारे में भी तो सोचें। कम-से-कम हमारे घरों में, जो अधिकता में है, जिसको, अब हम काम में नहीं लेते, ऐसी चीजों की तो delivery out जरूर करें। कई शहरों में, कई NGOs युवा साथियों के start-ups ये काम करते हैं। वो, लोगों के घरों से, कपड़े, मिठाइयाँ, खाना, सब कुछ इकट्ठा कर, जरूरतमंदों को ढूँढ-ढूँढ करके, उन तक पहुंचाते हैं और गुमनाम गतिविधि करते हैं। क्या इस बार, त्योहारों के इस season में, पूरी जागरूकता और संकल्प के साथ, इस चिराग तले अँधेरे को मिटा सकते हैं? कई गरीब परिवारों के चेहरे पर आई मुस्कान, त्योहारों पर, आपकी खुशियाँ दो-गुना कर देगी, आपका चेहरा, और चमकेगा, आपका दिया, और प्रकाशमान हो जाएगा, आपकी दीवाली और रोशन हो जायेगी।

मेरे प्यारे भाइयो-बहनो, दीपावली में, सौभाग्य और समृद्धि के रूप में, लक्ष्मी का घर-घर आगमन होता है। परंपरागत रूप से, लक्ष्मी का स्वागत है। क्या इस बार हम नए तरह से लक्ष्मी का स्वागत कर सकते हैं? हमारी संस्कृति में, बेटियों को लक्ष्मी माना गया है, क्योंकि, बेटी सौभाग्य और समृद्धि लाती है। क्या इस बार हम अपने समाज में, गाँवों में, शहरों में, बेटियों के सम्मान के कार्यक्रम रख सकते हैं? सार्वजनिक कार्यक्रम रख सकते हैं। हमारे बीच कई ऐसी बेटियाँ होंगी जो अपनी मेहनत और लगन से, talent से परिवार का, समाज का, देश का, नाम रोशन कर रही होंगी। क्या इस दिवाली पर भारत की इस लक्ष्मी के सम्मान के कार्यक्रम, हम कर सकते हैं? हमारे आस-पास कई बेटियाँ, कई बहुएँ ऐसी होंगी, जो, असाधारण काम कर रही होंगी। कोई, गरीब बच्चों की पढ़ाई का काम कर रही होंगी। कोई स्वच्छता और स्वास्थ्य को लेकर जागरूकता फैलाने में जुटी होगी, तो कोई, डॉक्टर, इंजीनियर बन कर समाज की सेवा कर रही होगी। वकील बन करके, किसी को न्याय दिलाने के लिए कोशिश करती होगी। हमारा समाज, ऐसी बेटियों की पहचान करे, सम्मान करे, और उन पर, अभिमान करे। इनके सम्मान के कार्यक्रम, देशभर में हो। एक काम और कर सकते हैं, कि, इन बेटियों की उपलब्धियों के बारे में, social media में अधिक से अधिक share करें, और #(Hashtag) use करें #bharatkilaxmi (भारत की लक्ष्मी)। जैसे हम सबने मिलकर एक महा-अभियान चलाया था 'Selfie with daughter' और वो दुनियाभर में फैल गया था। उसी तरह, इस बार, हम अभियान चलायें 'भारत की लक्ष्मी'। भारत की लक्ष्मी के प्रोत्साहन का मतलब है देश और देशवासियों के समृद्धि के रास्ते मजबूत करना।

मेरे प्यारे देशवासियों, 'मन की बात' का मैंने पहले भी कहा था बहुत बड़ा लाभ है कि मुझे कई जाने-अनजाने लोगों से प्रत्यक्ष-परोक्ष संवाद करके का सौभाग्य मिल जाता है। पिछले दिनों दूर-सुदूर अरुणाचल से एक विद्यार्थी ने अलीना तायंग, मुझे बड़ा interesting पत्र भेजा है। और उसमें लिखा है, मैं पत्र पढ़ देता हूँ आपके सामने...

आदरणीय प्रधानमंत्री जी,

मेरा नाम अलीना तायंग है। मैं रोड़ंग, अरुणाचल प्रदेश से हूँ। इस बार जब मेरे exam का result आया तो मुझे कुछ लोगों ने पूछा कि तुमने **Exam Warriors** किताब पढ़ी क्या? मैंने बताया, कि, यह पुस्तक तो मैंने नहीं पढ़ी है। लेकिन, वापस जाकर, मैंने, ये किताब खरीदी और उसे 2-3 बार पढ़ गई।



इसके बाद मेरा अनुभव काफी अच्छा रहा। मुझे लगा, कि, यदि मैंने ये किताब exam से पहले पढ़ी होती तो मुझे काफी लाभ होता। मुझे इस किताब से कई पहलू बहुत अच्छे लगे, लेकिन, मैंने ये भी चीज़ देखी कि students के लिए तो बहुत सारे मंत्र हैं लेकिन parents और teachers के लिए इस बुक में ज्यादा कुछ नहीं है। मैं चाहूँगी कि अगर आप किताब के नए edition के बारे में कुछ सोच रहे हैं तो उसमें parents और teachers को लेकर कुछ और मंत्र, कुछ और content जरूर शामिल करें।”

देखिये, मेरे युवा साथियों को भी भरोसा है कि देश के प्रधान सेवक को काम बतायेंगे, तो, हो ही जाएगा।

मेरे नन्हे से विद्यार्थी मित्र, पहले तो, पत्र लिखने के लिए आपका धन्यवाद। **Exam Warriors 2-3** बार पढ़ने के लिए, धन्यवाद। और पढ़ते समय, उसमें से क्या कमी है ये भी मुझे बताने के लिए, बहुत-बहुत धन्यवाद और साथ-साथ मेरे इस नन्हे से मित्र ने मुझे काम भी सौंप दिया है। कुछ करने का आदेश दिया है। मैं जरूर आपके आदेश का पालन करूँगा। आपने जो कहा है कि अगर मैं नयी edition के समय निकल पाऊँगा तो जरूर उसमें मैं parents के लिए, teachers के लिए कुछ बातें लिखने का प्रयास करूँगा। लेकिन मैं आप सबसे आग्रह करूँगा कि क्या मुझे आप लोग मदद कर सकते हैं? रोजमर्रा की जिन्दगी में आप क्या अनुभव करते हैं। देश के सारे विद्यार्थियों से, teachers से, parents से मेरा आग्रह है, कि, आप, stress free exam से जुड़े पहलुओं को लेकर के, अपने अनुभव मुझे बताइए, अपने सुझाव बताइए। मैं जरूर उसका अध्ययन करूँगा। उस पर मैं सोचूँगा और उसमें से जो मुझे ठीक लगेगा उसको मैं मेरे अपने शब्दों में, अपने तरीके से जरूर लिखने का प्रयास करूँगा, और हो सकता है, अगर, आपके सुझाव ज्यादा आयेंगे तो मेरी नई edition की बात भी पक्की हो जायेगी। तो मैं इंतज़ार करूँगा आपके विचारों का। अरुणाचल के हमारे नन्हे से दोस्त, विद्यार्थी अलीना तायंग को फिर से एक बार आभार व्यक्त करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, आप अखबारों के माध्यम से, टी.वी. के माध्यम से देश के प्रधानमंत्री के व्यस्त कार्यक्रमों के विषय में जानते भी हैं, व्यस्तता की चर्चा भी करते हैं। लेकिन, आपको मालूम है ना मैं भी आप ही के जैसा एक सामान्य इंसान हूँ। एक सामान्य नागरिक हूँ और इसलिए एक सामान्य जिंदगी में जो-जो चीज़ों का प्रभाव होता है, वैसा प्रभाव मेरे जीवन में मेरे मन को भी होता है क्योंकि मैं भी तो आप ही के बीच निकला हूँ ना। देखिये, इस बार US Open में, जीत के, जितने चर्चे थे, उतने ही, runner up Daniil Medvedev के speech के भी थे। Social Media पर काफी चल रहा था तो फिर, मैंने भी वो speech सुनी और match भी देखा। 23 साल के Daniil Medvedev उनकी simplicity और उनकी maturity हर किसी को प्रभावित करने वाली थी। मैं तो जरूर प्रभावित हुआ। इस speech से बस थोड़ी देर पहले ही वे 19 बार के Grand Slam विजेता और tennis के legend Rafael Nadal से फाइनल में हार गए थे। इस अवसर पर कोई और होता तो वह उदास और निराश हो गया होता, लेकिन, उनका चेहरा मुरझाया नहीं, बल्कि उन्होंने, अपनी बातों से सब के चेहरों पर मुस्कान ला दी। उनकी विनम्रता, सरलता और true sense में letter and spirit में sportsman spirit का जो रूप देखने को मिला, हर कोई, कायल हो गया। उनकी बातों का वहाँ मौजूद दर्शकों ने गर्मजोशी से स्वागत किया। Daniil ने champion Nadal की भी जमकर के तारीफ की। उन्होंने कहा कि किस प्रकार Nadal ने लाखों युवाओं को tennis के लिए प्रेरित किया है। साथ ही ये भी कहा कि उनके साथ खेलना कितना मुश्किल था। कड़ी टक्कर में हार के बाद भी उन्होंने अपने प्रतिद्वंदी Nadal की तारीफ कर sportsman spirit का जीता जागता सबूत दे दिया। हालांकि दूसरी तरफ champion Nadal ने भी Daniil के खेल की जमकर सराहना की। एक ही match में हारने वाले का जोश और जीतने वाले की विनम्रता दोनों देखने लायक थी। यदि आपने Daniil

medvedev की speech नहीं सुनी है। तो मैं आप सभी से विशेष रूप से युवाओं से कहूँगा कि उनके इस video को जरूर देखें। इसमें हर वर्ग और हर उम्र के लोगों के सीखने के लिए बहुत कुछ है। ये वे क्षण होते हैं, जो, हार-जीत से बहुत परे होते हैं। हार-जीत कोई मायना नहीं रखता है। जिदगी जीत जाती है और हमारे यहाँ तो शास्त्रों में बहुत बढ़िया ढंग से इस बात को कहा गया है। हमारे पूर्वजों की सोच सचमुच में काबिले दाद है। हमारे यहाँ शास्त्रों में कहा गया है :-

विद्या विनय उपेता हरति

न चेतांसी कस्य मनुजस्य ।

मणि कांचन संयोगः

जनयति लोकस्य लोचन आनन्दम

यानी, जब किसी व्यक्ति में योग्यता और विनम्रता एक साथ समाहित हो जाए, तो वो फिर, किसका दिल नहीं जीत सकता है। वास्तव में, इस युवा खिलाड़ी ने दुनिया भर के लोगों का दिल जीता है।

मेरे प्यारे देशवासियों और खास-करके मेरे युवा मित्रों, मैं अब जो बात करने जा रहा हूँ, वो, सीधा-सीधा आपकी भलाई के लिए कर रहा हूँ। वाद-विवाद चलते रहेंगे, पक्ष-विपक्ष चलता रहेगा, लेकिन, कुछ चीजें, बढ़ने से पहले ही अगर रोक लेते हैं, तो, बहुत बड़ा लाभ होता है। जो चीजें बहुत बढ़ जाती हैं। बहुत फैल जाती हैं। उसको बाद में रोकना बहुत मुश्किल होता है। लेकिन, अगर शुरू में ही हम जागृत होकर के उसे रोक लें, तो, बहुत कुछ बचाया जा सकता है। इसी भाव से, मेरा मन करता है, आज, खास-करके मेरे युवाओं से मैं जरूर कुछ बातें करूँ। हम सभी जानते हैं कि तम्बाकू का नशा, सेहत के लिए, बहुत नुकसानदायक होता है और उसकी लत छोड़ना भी बहुत मुश्किल हो जाता है। तम्बाकू का सेवन करने वाले लोगों को cancer, diabetes, blood pressure जैसी बीमारियों का खतरा बहुत अधिक बढ़ जाता है। ऐसा हर कोई कहता है। तम्बाकू से नशा उसमें मौजूद nicotine के कारण होता है। किशोरावस्था में इसके सेवन से दिमाग का विकास भी प्रभावित होता है। लेकिन, आज, मैं आपसे, एक नए विषय पर बात करना चाहता हूँ। आपको पता होगा, कि, हाल ही में भारत में e-cigarette पर प्रतिबन्ध लगाया गया है। सामान्य cigarette से अलग e-cigarette एक प्रकार का electronic उपकरण होता है। e-cigarette में nicotine युक्त तरल पदार्थ को गर्म करने से एक प्रकार का chemical धुँआ बनता है। इसके माध्यम से nicotine का सेवन किया जाता है। सामान्य cigarette के खतरों को जहाँ हम सब भली-भाँति समझते हैं, वहीं, e-cigarette के बारे में एक गलत धारणा पैदा की गई है। ये भ्रान्ति फैलाई गई है कि e-cigarette से कोई खतरा नहीं है। बाकी cigarette की तरह इससे दुर्गन्ध न फैले, इसके लिए, इसमें सुगन्धित रसायन तक मिलाए जाते थे। हमने आस-पास देखा है, कि, अगर घर में पिता chain smoker होते हैं, तो भी, वो, घर के बाकी लोगों को smoking करने से रोकते हैं, टोकते हैं। और चाहते हैं, उनके बच्चों को cigarette की बीड़ी की आदत न लगे। उनकी, यही कोशिश होती है, कि, परिवार का कोई भी सदस्य धूम्रपान न करे, Smoking न करे। वो जानते हैं कि smoking से, तम्बाकू से शरीर को भारी नुकसान होता है। cigarette के खतरे को लेकर किसी प्रकार का भ्रम नहीं है। उससे नुकसान होता है। ये बेचने वाला भी जानता है। पीने वाला भी जानता है और देखने वाला भी जानता है। लेकिन e-cigarette का मामला बहुत ही अलग है। e-cigarette को लेकर लोगों में इतनी awareness नहीं है। वे इसके खतरे को लेकर भी पूरी तरह अंजान हैं और इसी कारण कभी-कभी कौतुहल में e-cigarette चुपके से घर में प्रवेश कर जाती है। और कभी तो कभी जादू दिखा रहा हूँ, ऐसे कर के भी बच्चे एक-दूसरे को

दिखाते रहते हैं। परिवार में माँ-बाप के सामने भी देखिये, मैं आज, नया जादू दिखाता हूँ। देखिये, मेरे मुँह में से मैं धुँआ निकालता हूँ। देखिये बिना आग लगाए, बिना दीया-सली जलाए, देखिये मैं धुँआ निकालता हूँ। जैसे कोई जादू का show दिखा रहा है और परिवार के लोग ताली भी बजा देते हैं। पता ही नहीं है। एक बार जैसे ही घर के किशोर और युवा इसके चंगुल में फँस गए, तो फिर, धीरे-धीरे, वे, इस नशे के आदी हो जाते हैं। इस बुरी लत के शिकार हो जाते हैं। हमारा युवा-धन बर्बादी के रास्ते पर चल पड़ता है। अनजाने में चल पड़ता है। वास्तव में e- cigarette में कई हानिकारक chemical मिलाए जाते हैं, जिसका, स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। आप जानते ही हैं, कि, जब कोई हमारे आसपास धूम्रपान करता है, तो हमें इसका पता गंध से ही चल जाता है। उसके जेब में cigarette का packet हो, तब भी, गंध से पता चल जाता है। परन्तु, e- cigarette के साथ ऐसी बात नहीं है। ऐसे में, कई किशोर और युवा, जाने-अनजाने और कभी fashion statement के रूप में बड़े गर्व के साथ अपने किताबों के बीच में, अपने दफ्तर में, अपनी जेब में, कभी-कभी अपने हाथ में लेकर के घूमते नजर आ रहे हैं और वो इसके शिकार हो जाते हैं। युवा पीढ़ी देश का भविष्य है। e- cigarette पर प्रतिबन्ध लगाया गया है ताकि नशे का यह नया तरीका हमारे युवा देश को तबाह न कर दे। हर परिवार के सपनों को रौंद न डाले। बच्चों की जिंदगी बर्बाद न हो जाए। ये बीमारी, ये आदत समाज में जड़ें न जमा दें।

मैं आप सभी से यह आग्रह करता हूँ, कि, तम्बाकू के व्यसन को छोड़ दें और e- cigarette के संबंध में कोई गलत फहमी न पालें। आइये हम सब मिलकर एक स्वस्थ भारत का निर्माण करें।

हाँ! आपको Fit India तो याद है न? Fit India का मतलब यहाँ थोड़ा है कि हाथ-पैर सुबह-शाम दो-दो घंटे हम gym में चले जाएं, तो हो जाएगा। इन सब से भी बचना होता है Fit India के लिए। मुझे विश्वास है मेरी बात आपको बुरी नहीं लगेगी, जरूर अच्छी लगेगी।

मेरे प्यारे भाइयो बहनो, ये हम सब के लिए सौभाग्य की बात है कि हमारा भारतवर्ष ऐसे असाधारण लोगों की जन्म-भूमि और कर्म-भूमि रहा है, जिन्होंने, अपने लिए नहीं, बल्कि, दूसरों की भलाई के लिए सारा जीवन खपा दिया है।

ये हमारी भारतमाता, ये हमारा देश, बहुरत्ना वसुंधरा है। अनेक मानव रत्न इस धरती से निकले हैं। भारत-वर्ष ऐसे असाधारण लोगों की जन्म-भूमि रहा है, कर्म-भूमि रहा है। और ये वो लोग हैं, जिन्होंने, अपने लिए नहीं, औरों के लिए, अपने आप को खपा दिया है। ऐसी ही, एक महान विभूति को 13 अक्टूबर को वेटिकन सिटी में सम्मानित किया जा रहा है। यह हर भारतीय के लिए गर्व की बात है, कि, पोप फ्रांसिस आने वाले 13 अक्टूबर को मरियम थ्रेसिया को संत घोषित करेंगे। सिस्टर मरियम थ्रेसिया ने 50 साल के अपने छोटे से जीवनकाल में ही मानवता की भलाई के लिए जो कार्य किए, वो पूरी दुनिया के लिए एक मिसाल है। समाज सेवा और शिक्षा के क्षेत्र से, उनका अद्भुत लगाव था। उन्होंने, कई स्कूल, हॉस्टल और अनाथालय बनवाए, और जीवनपर्यन्त, इस मिशन में लगी रहीं। सिस्टर थ्रेसिया ने जो भी कार्य किया, उसे निष्ठा और लगन के साथ, पूरे समर्पण भाव से, पूरा किया। उन्होंने, Congregation of the Sisters of the Holy Family की स्थापना की। जो आज भी उनके जीवन दर्शन और मिशन को आगे बढ़ा रहा है। मैं एक बार फिर से सिस्टर मरियम थ्रेसिया को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और भारत के लोगों को खास तौर पर हमारे ईसाई भाई-बहनों को इस उपलब्धि के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, भारत ही नहीं आज पूरी दुनिया के लिए ये गर्व का विषय है, कि, आज जब हम गाँधी 150 मना रहे हैं, तो इसके साथ ही, 130 करोड़ देशवासियों ने Single Use Plastic से मुक्त होने का संकल्प लिया है। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में, भारत ने पूरे विश्व में जिस प्रकार की lead ली है, उसे देखकर, आज सभी देशों की नजरे भारत की ओर टिकी है। मुझे पूरा विश्वास है, आप सब 2

अक्टूबर को Single Use Plastic से मुक्ति के लिए होने वाले अभियान का हिस्सा बनने वाले ही होंगे । जगह-जगह लोग अपने-अपने तरीके से इस अभियान में अपना योगदान दे रहे हैं । लेकिन, हमारे ही देश के एक नौजवान ने, एक बड़ा ही अनोखा अभियान चलाया है । उनके इस काम पर मेरा ध्यान गया, तो, मैंने उनसे फ़ोन पर बात करके उनके इस नए प्रयोग को जानने समझने की कोशिश की । हो सकता है, उनकी ये बातें देश के और लोगों को भी काम आये । श्रीमान् रिपुदमन बेल्वी जी एक अनोखा प्रयास कर रहे हैं । वे Plogging करते हैं । जब पहली बार मैंने Plogging शब्द सुना तो मेरे लिए भी नया था । विदेशों में तो शायद ये शब्द कुछ मात्रा में उपयोग हुआ है । लेकिन, भारत में, रिपुदमन बेल्वी जी ने इसको बहुत ही प्रचारित किया है । आइये उनसे कुछ बातें करते हैं ।

मोदी जी : हेल्लो रिपुदमन जी नमस्कार मैं नरेन्द्र मोदी बोल रहा हूँ।

रिपुदमन : जी सर, बहुत-बहुत Thank You सर ।

मोदी जी : रिपुदमन जी ।

रिपुदमन : हाँ जी सर ।

मोदी जी : आप जो ये Plogging को लेकर के इतना बड़ा समर्पित भाव से काम कर रहे हैं ।

रिपुदमन : जी सर ।

मोदी जी : तो मेरे मन में जिज्ञासा थी तो मैंने सोचा मैं खुद ही फ़ोन करके आपसे पूछूँ ।

रिपुदमन : Ok

मोदी जी : ये कल्पना कहाँ से आई आपके मन में ?

रिपुदमन : हाँ जी सर ।

मोदी जी : ये शब्द, ये तरीका कैसे मन में आया ।

रिपुदमन : सर युवाओं को आज कुछ cool चाहिए, कुछ interesting चाहिए उनको motivate करने के लिए तो मैं तो motivate हो गया | अगर मेरे को 130 करोड़ भारतीयों को इस मुहिम में जोड़ना है तो मुझे कुछ cool करना था, कुछ interesting करना था तो मैं खुद एक runner हूँ, तो सुबह जब हम run करते हैं तो traffic कम होता है, लोग कम होते हैं तो कूड़ा और trash और plastic सबसे ज्यादा दिखता है तो instead of cribbing and complaining मैंने सोचा कि इसके बारे में कुछ करते हैं और अपने running group के साथ start किया Delhi में और फिर पूरे भारत में इसको लेकर गया | हर जगह से काफी appreciation मिला...

मोदी जी : exactly आप क्या करते थे ? थोड़ा समझिए ताकि मुझे भी ध्यान में आये और 'मन की बात' के माध्यम से देशवासियों को भी पता चले |

रिपुदमन : सर, तो हमने ये start किया 'Run & Clean-up Movement' | जहाँ पर हम running groups को उनके work out के बाद, उनकी cool down activity में हमने बोला, आप, कूड़ा उठाना start करो, अपना आप plastic उठाना start करो तो आप running कर रहे हो, आप cleaning-up कर रहे हो, suddenly बहुत सारी exercise add हो रही है | तो आप just running नहीं कर रहे हो और squats कर रहे हो, deep squats कर रहे हो, आप lunges कर रहे हो, आप forward bent कर रहे हो | तो वो एक holistic work out हो गया | और आपको जान कर खुशी होगी कि पिछले साल काफी

## सारी fitness magazines में India का Top fitness trend

इसको nominate किया गया है इस Fun को...

मोदी जी : आपको बधाई है इस बात के लिए ।

रिपुदमन : धन्यवाद सर ।

मोदी जी : तो अभी आपने 5 सितम्बर से कोच्चि से शुरू किया है ।

रिपुदमन : जी सर, इस mission का नाम है 'R|Elan Run to make India Litter Free' जैसे आपने October 2<sup>nd</sup> को एक historic verdict देना है – and I am sure कूड़ा मुक्त होगा तो plastic मुक्त भी होगा and वो एक individual responsibility आएगी और तो I am running and cleaning-up thousand kilometres covering 50 cities. तो सबने बताया कि ये शायद दुनिया की Longest clean-up drive होगी और इसके साथ-साथ हम एक बहुत ही cool सर, social media #(Hashtag) use किया है हमने #PlasticUpvaas जहाँ पर हम लोगों को बोल रहे हैं कि आप हमें बताइए, आप कौनसी single चीज़ है, single use anything, not just single use plastic but single use anything जो आप completely अपनी life से हटा देंगे ।

मोदी जी: वाह... आप 5 सितम्बर से निकले हो तो क्या अनुभव

है अब तक का आपका ?

रिपुदमन : सर, अभी तक तो बहुत अच्छा अनुभव रहा है । पिछले

दो साल में भी हमने 300 के आस-पास Plogging drives की है all over India. तो, जब हमने कोच्चि से start किया तो running groups ने join किया, वहाँ के local जो

clean-ups होते हैं उनको मैंने अपने साथ जोड़ा | कोच्चि के बाद मदुरै, कोयंबटूर, Salem अभी हमने उडुपी में किया वहाँ पे एक स्कूल invite आया तो छोटे-छोटे बच्चे सर, 3<sup>rd</sup> standard से लेकर 6<sup>th</sup> standard तक उनको एक workshop देने के लिए बुलाया था मेरे को आधे घंटे के लिए और वो आधे घंटे का workshop तीन घंटे का Plogging drive हो गया | सर, because बच्चे इतने enthusiastic थे that they wanted to do this and they wanted to take it back और अपने parents को बताना, अपने neighbours को बताना अपने peers को बताना वो सबसे बड़ा motivation होता है हमारे लिए इसको next level पे ले के जाना |

मोदी जी : रिपु जी परिश्रम नहीं है ये, एक साधना है | सचमुच में आप साधना कर रहे हैं |

रिपुदमन : जी सर |

मोदी जी : | मेरी तरफ से बहुत बधाई देता हूँ | लेकिन मान लीजिये आपको तीन बातें देशवासियों को कहनी है | तो ऐसी तीन बातें specific क्या सन्देश देंगे आप ?

रिपुदमन : मैं actually तीन steps देना चाहूँगा | To a litter free India, To a कूड़ा मुक्त भारत | Step number one कूड़ा कूड़ेदान में डालें सिर्फ | Step number two कोई भी आपको कूड़ा दिखता है जमीन पे उसको उठाये और कूड़ेदान में डालें | Step number three अगर कूड़ादान नहीं दिखता है अपनी जेब में रखे या अपनी गाड़ी में रखे घर लेकर जाए | Segregate करें into Dry and Wet waste और सुबह municipality की गाड़ी आयेगी उनको दे दें | अगर हम ये तीन steps follow करेंगे we will see a litter free India हमें कूड़ा मुक्त भारत मिलेगा |

मोदी जी : देखिये रिपु जी बहुत सरल शब्दों में और सामान्य

मानवी कर सके उस भाषा में आपने एक प्रकार से  
गाँधी जी के सपने को ले करके चल रहे हैं, साथ-  
साथ, गाँधी जी की जो सरल शब्दों में बात बताने का  
तरीका था वो भी आपने adopt कर लिया है।

रिपुदमन : धन्यवाद।

मोदी जी : इसलिए आप बधाई के पात्र है। रिपुदमन जी आपसे

बात करके मुझे बहुत अच्छा लगा और आपने एक बहुत  
ही innovative तरीके से, और खासकर के, नौजवानों  
को पसंद आये उस तरीके से, इस पूरे कार्यक्रम को  
ढाला है। मैं आपको बहुत बधाई देता हूँ। और  
साथियों इस बार पूज्य बापू की जयंती के अवसर पर  
खेल मंत्रालय भी 'Fit India Plogging Run' का आयोजन  
करने जा रहा है। 2 अक्टूबर को 2 किलोमीटर  
Plogging, पूरे देशभर में ये कार्यक्रम होने वाले हैं। ये  
कार्यक्रम कैसे करना चाहिए, कार्यक्रम में क्या होता है ये  
रिपुदमन जी के अनुभव से हमने सुना है। 2 अक्टूबर  
से शुरू होने वाले इस अभियान में हम सबको ये करना  
है कि हम 2 किलोमीटर तक jogging भी करें, और  
रास्ते में पड़े प्लास्टिक के कचरों को भी जमा करे।  
इससे हम न केवल अपनी सेहत का खयाल रखेंगे बल्कि  
धरती माँ की सेहत की भी रक्षा कर सकेंगे। इस  
अभियान से, लोगों में fitness के साथ-साथ स्वच्छता को  
ले कर भी जागरूकता बढ़ रही है। मुझे विश्वास है,  
कि, 130 करोड़ देशवासी इस दिशा में एक कदम  
उठाएंगे तो single use plastic की मुक्त होने की दिशा में  
अपना भारत 130 करोड़ कदम आगे बढ़ जाएगा।  
रिपुदमन जी, फिर एक बार, आपको बहुत-बहुत  
धन्यवाद। और आपको, आपकी team को, और ये नई  
कल्पकता के लिए, मेरी तरफ से बहुत-बहुत बधाई।



Thank you !

मेरे प्यारे देशवासियो, 2 अक्टूबर की तैयारियाँ तो पूरे देश में और दुनिया में चल रही हैं, लेकिन, हम 'गाँधी 150' को कर्तव्यपथ पर ले जाना चाहते हैं। अपने जीवन को देशहित में बदलने के लिए आगे बढ़ना चाहते हैं। एक बात advance में जरा याद कराने का मन करता है। वैसे मैं, अगली 'मन की बात' में उसको विस्तार से जरूर कहूँगा लेकिन आज मैं जरा advance में इसलिए कह रहा हूँ ताकि आपको तैयारी करने का अवसर मिले। आपको याद है, कि, 31 अक्टूबर, सरदार वल्लभभाई पटेल की जन्म जयंती है। 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' ये हम सबका सपना है और उसी निमित्त, हर वर्ष 31 अक्टूबर को, हम पूरे देश में, 'Run for Unity' देश की एकता के लिए, दौड़। अपार, वृद्ध, सब लोग, स्कूल, कॉलेज सब, हजारों की तादाद में, हिंदुस्तान के लाखों गाँव में उस दिन देश की एकता के लिए हमें दौड़ना है। तो आप अभी से तैयारी शुरू कीजिये। विस्तार से तो बात आगे जरूर करूँगा लेकिन अभी समय है, कुछ लोग practise भी शुरू कर सकते हैं, कुछ योजना भी कर सकते हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, आपको याद होगा, 15 अगस्त को मैंने लाल किले से कहा था कि 2022 तक आप भारत के 15 स्थानों पर जाएँ। कम से कम 15 स्थान और वो भी हो सके तो एक रात, दो रात रुकने वाला कार्यक्रम बनाये। आप हिंदुस्तान को देखें, समझें, अनुभव करें। हमारे पास कितनी विविधताएँ हैं। और जब ये दिवाली के त्योहार में छुट्टियों के दिन आते हैं, लोग जरूर जाते हैं और इसलिए मैं फिर से आग्रह करूँगा कि आप भारत की किसी भी ऐसी 15 जगहों पर घूमने जरूर जाएँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, अभी परसों ही 27 सितम्बर को World Tourism Day मनाया गया और दुनिया की कुछ ज़िम्मेवार एजेंसिया Tourism का ranking भी करती हैं और आपको जानकर के खुशी होगी कि India ने Travel & Tourism Competitive Index में बहुत सुधार किया है। और ये सब आप सब के सहयोग के कारण हुआ है। विशेषकर Tourism का महत्त्व समझने के कारण हुआ है। स्वच्छता के अभियान का भी उसमें बहुत बड़ा योगदान है। और ये सुधार कितना है मैं बताऊँ आपको? आपको जरूर आनंद होगा। आज हमारा rank चौतीस है और पांच साल पहले हमारा rank 65वें नंबर पे था यानि एक प्रकार से हम बहुत बड़ा jump लगा चुके हैं। अगर हमने और कोशिश की तो आज़ादी के 75 साल आते-आते हम tourism में दुनिया के प्रमुख स्थानों में अपनी जगह बना लेंगे।

मेरे प्यारे देशवासियों, आप सब को फिर एक बार विविधता से भरे हुए भारत के विविध-विविध त्योहारों की भी बहुत-बहुत शुभकामनाएं। हाँ ! ये भी जरूर देखना, कि, दीवाली के दिनों में पटाखे वगैरा से कहीं आगजनी, कहीं किसी व्यक्ति का नुकसान न हो जाए। इसके लिए जो भी ऐतराज(एहतियात) बरतना चाहिए आप लोग जरूर ऐतराज(एहतियात) बरतिये। खुशी भी होनी चाहिए, आनंद भी होना चाहिए, उत्साह भी होना चाहिए और हमारे त्योहार सामूहिकता की महक भी लाते हैं, सामूहिकता के संस्कार भी लाते हैं। सामूहिक जीवन ही एक नया सामर्थ्य देता है। उस नये सामर्थ्य के साधना का मुकाम होता है त्योहार। आइये ! मिलजुल करके उमंग से, उत्साह से, नये सपने, नये संकल्प के साथ हम त्योहारों को भी मनाएँ। फिर एक बार बहुत-बहुत शुभकामनाएं। धन्यवाद।

\*\*\*\*\*

**VRRK/AK**

(रिलीज़ आईडी: 1586588) आगंतुक पटल : 1322

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: Urdu , Punjabi , Assamese , Gujarati , English , Marathi , Bengali , Tamil , Kannada , Malayalam